ओशो संबोधि महोत्सव

मेरे शिष्य मेरे उपवन हैं और जब उनका फूल खिलता है तो मुझे वैसा ही आह्लाद होता है जैसा किसी माली को। मेरे प्रत्येक शिष्य के खिलने पर, मैं फिर से बुद्धत्व को प्राप्त होता हूं।...तुम अपनी संबोधि में मेरे निकट ही नहीं आते, तुम मेरे साथ एकरूप हो जाते हो।

– ओशो

21 मार्च, ओशो संबोधि दिवस के उत्सव को नृत्य तथा ध्यान के साथ दुनिया भर में मनाया गया। 24 मार्च को ओशो वर्ल्ड गैलेरिया, नई दिल्ली में मा हिना भारती द्वारा भारतनाट्यम और ओडिसी नृत्य का सुंदर संयोग देखने को मिला। उल्लेखनीय है कि पुणे में ओशो कम्यून के प्रथम चरण में मा हिना नृत्य-ध्यान कार्यक्रमों का संचालन किया करती थी और एक बार स्वयं ओशो ने भी दर्शन के समय उनका नृत्य देखा था और उन्हें आशीर्ष दिये थे। इसी सप्ताह रंगीन ग्लास वेयर (कांच के बर्तन) की प्रदर्शनी भी आयोजित हुई।

मुल्ला नसरुद्दीन दिवस

ऐसे मंदिर चाहता हूं मैं–जो नृत्य के, संगीत के, हंसने के मंदिर हों। ऐसा धर्म चाहता हूं मैं–जो मुस्कुराहटों का, प्रफुल्लता का, प्रमुदित होने का धर्म हो।

– ओशो

1 अप्रैल यानि मुल्ला नसरुद्दीन दिवस... ओशो ने सदा ही उत्सव पर जोर दिया है, हंसने पर जोर दिया है। गंभीरता को, उदासीनता को ओशो रोग कहते हैं। हास्य और उत्सव को समर्पित यह दिन ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में मुल्ला नसरुद्दीन दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर श्री राजेश चेतन ने मंच का संचालन किया और खूब हंसाया। श्री यूसुफ भारद्वाज का अपना ही अंदाज था। सुश्री ऋतु गोयल के काव्य की मधुरिमा ने लोगों के हृदयों को सुकोमल संस्पर्श किया। श्री भारद्वाज ने कहा कि आज की इस तेज चलती जिंदगी में हम हंसना भूल गये हैं। वहीं मा लवलीन ने कहा कि मुल्ला प्रसन्नता का एक प्रतीक है। संबोधि दिवस, ग्लास वेयर प्रदर्शनी और मुल्ला दिवस के समाचार एशियन एज, हिन्दु, इंडियन एक्सप्रेस आदि समाचार-पत्रों ने प्रकाशित किए।